मील के पत्थर

1989:विकिरण एवं आइसोटोप प्रोद्योगिकी बोर्ड का गठन

1992: प्रथम रडियोचित्रण कैमरा मार्केट में उपलब्ध कराया गया

1993: 10 लाखवां रडियोआइसोटोप प्रेषण भेजा गया

1994: उच्च स्पैसिफ़िक एक्टिविटी सल्फर- 35 मैथ्योनिन उपलब्ध

1995: अनुसंधान हेतु गामा चैम्बर 5000 उपल्ब्ध

1996: पर्माल्यूसी युक्त पी-32 न्यूक्लियोटाईड का प्रारंभ

1997: ग्राहोपयोगी आलिगोन्यूक्लिओटाइड का पदार्पण

1997: बांग्लादेश में रेडियोफर्मास्यूटिकल प्रहस्तन सुविधा प्रदत्त

1999: पी-33 चिह्नित न्यूक्लिओटाइड का प्रारंभ

1999: सीरिया में रेडियोफर्मास्यूटिकल प्रहस्तन सुविधा का कमिशन

2000: वाशी स्थित विकिरण संसाधन संयंत्र का कमिशनन

2000: आइसोमैड संयंत्र आई एस ओ 9002 द्वारा प्रमाणित

2000: प्रथम ब्लड इरेडियेटर 2000 का मार्केट में प्रवेश

2002: एबीएस मैडिकेयर को हाइड्रोजेल टैक्नालजी हस्तांतरित

2004: प्राइवेट सैक्टर में ओजीएफेल कोलकाता द्वारा विकिरण संयंत्र

2004: कनाडा स्थित एमडीएस नार्डियन को 350 किलोक्यूरी कोबाल्ट- 60 का निर्यात

2004: एईआरबी द्वारा इन्स्टाल एन्ड ओपरेट इरेडियेटर को शीत समुद्री उत्पादों के किरणन की मंजूरी

2005: डा रेड्डी लैबोरेटरी को हाइड्रोजेल टैक्नालाजी हस्तांतरित

2005: वियतनाम को 100 किलोक्यूरी कोबाल्ट-60

2005: एवी प्रोसेसर्स, मुम्बई के1000 किलोक्यूरी विकिरण संयंत्र का शुभारंभ

2005: यूनिवर्सल मैडिकेप, वडोदरा के विकिरण संयंत्र का शुभारंभ

2006: एआरएआई, पुणे को रेडियोएक्टिव सामग्री हेतु यातायात फ्लास्क को प्रमाणित करने के लिये टैस्ट सुविधा में सहयोग

2006: हेलिकोबैक्टर पाइलोरि के लिये कार्बन-14 चिह्नित यूरिया कैप्सूल